ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 8, सेमिनार विशेषांक, नवंबर 2019

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय वाद्य संगीत के सन्दर्भ में आधुनिक प्रवृत्तियों का वैश्विक प्रभाव

डॉ. तनवी थापर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत विभाग, भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली

Paper recieved on : Sep 11, 2019, Sep 20, 2019, May 20, 2020, May 31, 2020, Accepted : June 15, 2020

सार-संक्षेप

वर्तमान समय में भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत के प्रस्तुतीकरण में जो परिवर्तन देखा जा सकता है वह आधुनिक प्रवृत्तियों के वैश्विक प्रभाव को दर्शाता हैं। आज वैज्ञानिक संयन्त्रों की उपलब्धता से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीत के विकास की जो सम्भावनाएँ विकसित हुई हैं, उनसे इस चर्चा का क्षेत्र और अधिक व्यापक व विस्तृत हो जाता है। आज का मानव जीवन वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर चुका है। अपने इस शोध-पत्र के माध्यम से मैं कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों एवं नवीन परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से बताना चाहती हूँ जिनके वैश्विक प्रभाव से वर्तमान भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत को संगीत जगत एक नए एवं विकसित रूप में स्वीकार कर रहा है। यह स्पष्टीकरण कुछ मुख्य बिन्दुओं पर समझाया जाने का प्रयास किया गया है। जैसे—विभिन्न पाश्चात्य वाद्यों का भारतीय संगीत में आना विद्युत, सांगीतिक उपकरणों का सहायक वाद्य के रूप में प्रयोग, संगीत प्रदर्शन एवं सांगीतिक रिकॉर्डिंग्स के लिए डिजीटल उपकरणों का प्रयोग, विभिन्न वाद्यों को इलेक्ट्रीक रूप से प्रदर्शित करने की कला में परिवर्तन, भारतीय संगीत की बदलती शैली आदि। अपने इस शोध-पत्र के माध्यम से मैंने भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्यों की वर्तमान स्थिति या उन पर पाश्चात्य एवं वैश्विक प्रभाव Electronic or Digital Sound Technology का बदलता स्वरूप आदि सभी विषयों पर सकारात्मक पहलू दर्शाने का प्रयास किया है। जिसमें कलाकार की कला उसका कौशल और आधुनिकता दोनों आवश्यक है।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, आधुनिक, परिवर्तन, नवीन प्रवृत्तियाँ एवं इलैक्ट्रॉनिक उपकरण।

शोध-पत्र

वर्तमान समय में भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत के प्रस्तुतीकरण में जो परिवर्तन देखा जा सकता है वह आधुनिक प्रवृत्तियों के वैश्विक प्रभाव को दर्शाता है। पिछले छः दशकों में भारतीय संगीत में भारतीय वाद्यों के एकल प्रस्तुतिकरण एवं गायन व नृत्य के साथ संगत के रूप में प्रयोग होने के साथ विभिन्न बदलावों को आधुनिक परिवर्तनों की तरह वैश्विक स्तर पर महसूस किया जा रहा है।

वैश्वीकरण के इस युग में परम्परागत संगीत पर आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में आई विकासात्मक प्रवृत्तियाँ सदैव नवीन सम्भावनाओं का मार्ग प्रशस्त करती है। आज वैज्ञानिक संयन्त्रों की उपलब्धता से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीत के विकास की जो सम्भावनाएँ विकसित हुई हैं, उनसे इस चर्चा का क्षेत्र और अधिक व्यापक व विस्तृत हो जाता है।

परंपरागत या आधुनिकता हर युग में साथ चलते हैं जिसमें ''निरन्तरता'' और ''परिवर्तन'' दोनों समाविष्ट रहते हैं। इसलिए परम्परा कला की सृजनात्मकता में कभी बाधा न बनकर उसकी मार्गदर्शक बनी रहती है जबकि आधुनिकता में नवीन परिवर्तन, प्रयोग, प्रयत्न और नवीन संवेदनाएँ सम्मिलित होती हैं लेकिन फिर भी परम्परा और नवीन प्रवृत्तियाँ परस्पर विरोधी नहीं होते क्योंकि दोनों में ही गतिशीलता विद्यमान रहती है। अंतर केवल इतना होता है कि 'परम्परा' सदैव संस्कारित व निश्चित आकार से युक्त होती है, और निश्चित मूल्यों और मापदण्डों से परिपारित होती है जबकि 'आधुनिकता' सदैव अपूर्ण निराकार और प्रयोगात्मक प्रक्रिया के रूप में विद्यमान रहती है।

आज का मानव जीवन वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर चुका है। शब्दकोष के अनुसार वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो अंतर्राष्ट्रीय विचारों, उत्पादों और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के पारस्परिक आदान-प्रदान को संगम प्रस्तुत करती है।

पाश्चात्य वाद्यों का भारतीय संगीत में आगमन

वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में हमारे शास्त्रीय संगीत के अनेक वाद्य विश्व के दूसरे देशों में प्रचलित हुए हैं, जैसे कि सितार, वीणा आदि। इन वाद्य यंत्रों ने हमारी संगीत परम्परा का परचम अन्य देशों में लहराया है तो दूसरी ओर विश्व के अनेक देशों के वाद्ययंत्र हमने अपने देश में अपनाए है। उदाहरण के लिए रबाब, खेमान्च आदि हमने दक्षिण-पूर्वी

देशों से प्राप्त किए और उन संगीत वाद्यों को हमने भारतीय स्वरूप देकर अपने संगीत में सम्मिलित कर लिया। टेलीविज़न और संगीत नामक लेख में इसका वर्णन इस प्रकार है—''अन्य वाद्ययंत्र जैसे कि वॉयलिन, हारमोनियम, मेंडोलिन, सेक्सोफोन, क्लेरीनेट आदि आज से शताब्दियों पूर्व हमने पश्चिमी देशों से प्राप्त किए और ये सभी अपने मौलिक स्वरूप में हमारे संगीत में विद्यमान है।''[1] क्लेरीनेट और सैक्सोफोन जैसे सुषिर वाद्य को भी भारतीय संगीत में सम्मिलित कर लिया गया है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो भारतीय संगीत के वाद्ययंत्र विदेशों में गए हैं उन्होंने अपने स्वयं के संगीत को ज्यों का त्यों बना कर रखा है। दूसरी ओर अन्य देशों से जो वाद्ययंत्र हमारे देश में आयातित हुए उनका अपना संगीत स्वरूप पूरी तरह से परिवर्तित होकर भारतीय संगीत में समाहित हो गया। इसके अतिरिक्त एक और वाद्य जो पाश्चात्य संगीत से भारतीय संगीत में आया है। वे निम्नलिखित हैं—

हवाइन गिटार (Hawwaiin Guitar)—वैसे तो विभिन्न प्रकार के गिटारों का प्रयोग भारतीय संगीत एवं भारतीय फिल्मी संगीत में प्रारंभ से ही होता रहा है। परन्तु हवाइन गिटार को भारतीय संगीत के प्रस्तुतीकरण के लिए उपयुक्त बनाने में इसे एक नवीन रूप प्रदान किया गया है इसकी संरचना, बनावट, तारों की संख्या आदि में परिवर्तन कर इसे शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में एक स्वतंत्र वाद्य के रूप में देखा जा सकता है। यह उन वाद्यों में आता है जो विदेशी वाद्य होने पर भारतीय संगीत को प्रस्तुत कर रहा है। ''इसका इलैक्ट्रिक रूप इलैक्ट्रिक हवाइन गिटार के नाम से प्रचार में है। इसका प्रयोग इलैक्ट्रिक के माध्यम से होता है तथा इसकी ध्वनि का नियंत्रण एम्पलीफॉयर तथा गिटार में लगे नॉब के द्वारा होता है।''[2] भारतीय वाद्य संगीत की दृष्टि से यह वाद्य पिछले 70 वर्षों में निरन्तर अपने विकास क्रम का हिस्सा बना हुआ है। वर्तमान में यह वाद्य भारत में ही नहीं बल्कि विश्वभर में गिटार के एक नवीन प्रकार के रूप में प्रसिद्धि पा रहा है।

मैंडोलियन (Mandolin)—''18वीं शताब्दी में इटली में इस वाद्य की उत्पत्ति हुई।[3] इसे Mandola भी कहते हैं।'' आमतौर पर इसे Plectrum या Pick से बजाते हैं। भारतीय संगीत में जिस Mandolin को प्रयोग में लाया गया वह पाश्चात्य Mandolin ही है। यह एक छोटा वाद्य है जो Lute के समान दिखता है। 1980 के दशक में इस वाद्य को सर्वप्रथम कर्नाटक संगीत के एक संगीत कार्यक्रम में स्वर्गीय पद्मश्री यू. श्रीनिवास द्वारा प्रदर्शित किया गया था। इस पर शास्त्रीय संगीत बजाने के लिए उन्होंने विभिन्न प्रकार से गमक, मींड आदि को कर्नाटक संगीत के सन्दर्भ में निकालने का प्रयास किया और यह सफल भी हुआ। इस पाश्चात्य वाद्य की वैश्विक प्रसिद्धि इतनी बढ़ गई की इसे किसी भी कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की नयी पीढ़ी सीखना व सुनना पसंद करती है।

सेक्सोफोन (Sexophone) और क्लेरिनेट (Clarinet)—सुषिर वाद्य सेक्सोफोन और क्लेरिनेट संगीत को प्रस्तुत करने में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। ''सेक्सोफोन को 1980 में श्री लक्ष्मीनरसिम्हा के द्वारा एक संगीत कार्यक्रम के दौरान सर्वप्रथम लाया गया।''[4] क्लासिकल म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट में इसका वर्णन इस प्रकार से मिलता है—''इस वाद्य का आगमन भारत में बैंड्स के माध्यम से हुआ। यह वाद्य उत्तरी तथा दक्षिण दोनों संगीत में बजाए जाने लगा। बैंड्स के साथ-साथ मिलिट्री बैंड्स में भी इसका प्रचार होने लगा।''[5] इसके पश्चात इस पुस्तक में इस वाद्य का वर्णन इस प्रकार से आया है—क्लारिनेट को 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में विभिन्न कर्नाटक संगीत के वाद्य वृन्द में प्रचार में लाया गया। वर्तमान में यह दोनों वाद्य पाश्चात्य वाद्य होने के साथ-साथ भारतीय कर्नाटक संगीत में भी अपनी एक विशेष भूमिका रखते हैं।

2. विद्युत संयंत्र एवं सहायक वाद्य

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा 20वीं शताब्दी में पहुँचते-पहुँचते पाश्चात्य देशों में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रादुर्भाव प्रारंभ हुआ। इन इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का निर्माण वैक्यूम ट्यूब से ट्रांज़िस्टरों, डायोड्स तथा इंटीग्रेड सर्किट से उत्पन्न हुआ विद्युत ध्वनि तरंगों पर आधारित था। वर्तमान में यह माइक्रो प्रोसेसरों तथा माइक्रोचिप द्वारा नियंत्रित होते हैं व इन पर आधारित भी होते हैं परिणामस्वरूप सिन्थसाइज़र इलेक्ट्रॉनिक ऑरगन जैसे वाद्य अस्तित्व में आए। भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग नामक पुस्तक में बताया गया है—''पाश्चात्य देशों की तरह भारतीय संगीत में भी 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों पर शोध व उनका प्रयोग आरंभ होने लगा। सन् 1971 में श्री राजनारायण द्वारा सर्वप्रथम इलेक्ट्रॉनिक श्रुतिबॉक्स (ध्रुवा) एवं इलेक्ट्रॉनिक वीणा (सुनाद विनोदिनी) का निर्माण किया गया।''[6] इसी श्रृंखला में आगे उनकी कम्पनी 'रेडल' ने इलेक्ट्रॉनिक तालोमीटर, तानपूरा (सारंग), तबला (तालमाला), लहरामशीन (सुनादमाला) इत्यादि का आविष्कार किया। इसी समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत में इलेक्ट्रॉनिक्स का प्रवेश हुआ जो कि वैश्विक आधुनिक प्रवृत्ति की देन रही, जिनका उपयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत में कलाकारों तथा विद्यार्थियों द्वारा व्यापक रूप से किया जा रहा है।

वर्तमान में रागिनी, स्वरांगिनी, स्वरांजिनी, रेडल आदि निर्माताओं द्वारा इसके नवीन रूप या संस्करण सामने आ रहे है। अब तानपुरा, स्वरमंडल, तालमाला मोबाइल फोन के माध्यम से App. के रूप में भी उपलब्ध है जिससे किसी भी संगीत विद्यार्थी या संगीत साधक इसका उपयोग कर लाभांवित हो सकता है।

3. इलैक्ट्रॉनिक डीवाइसिस, सॉफ्टवेयर, माइक्रोफोन्स, पिकअप आदि का प्रयोग

आज के समय में माइक किसी भी प्रस्तुति का एक अहम हिस्सा बन चुके हैं। अच्छे माइक सिस्टम के अभाव में बड़े से बड़ा कलाकार भी श्रोताओं पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ सकता। भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों को योगदान में माइक्रोफोन के प्रभाव को बतलाते हुए लेखक कहते हैं—''माइक्रोफोन के अविष्कार से पहले तो शास्त्रीय

गायक ऐसी खुली, दमदार व बुलंद आवाज में गायन करते थे कि सैंकड़ों श्रोताओं तक उनकी आवाज़ की पहुँच हो सके। आज के इस तकनीकी युग में गायक, गायन के लिए अलग तरह का माइक्रोफोन, तत्वाद्यो के लिए अन्य विशेष माइक्रोफोन यहाँ तक कि गज व मिज़राब आदि से बजने वाले वाद्यों के कलाकार अपना निजी माइक्रोफोन इस्तेमाल (उपयोग) में ला रहे है।''[7] साउंड सिस्टम से बराबर तालमेल भी आजकल सफल मंच प्रदर्शन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। हिन्दुस्तानी संगीत: परिवर्तनशीलता में साउंड सिस्टम की महत्ता को बतलाते हुए कहा गया है—''साउंड सिस्टम से ही गायक-वादक अपनी आवाज़ के अनुरूप बेस, ट्रेबल, मिड वॉल्यूम आदि को घटा-बढ़ा कर श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुति दे रहे हैं।''[8] समय परिवर्तन के साथ-साथ अनेक प्रकार की रिकॉर्डिंग प्रणाली सामने आई जैसे स्टीरियों रिकॉर्डिंग, मोनो रिकॉर्डिंग तत्पश्चात् मल्टीचैनल्स रिकॉर्डिंगफिर मल्टीट्रैक रिकॉर्डिंग जिसमें गाने वाले के साथ-साथ अन्य कलाकारों जैसे सितार, बाँसुरी, तबला इत्यादि सबकी ध्वनियाँ अलग-अलग सुनाई देती है। आधुनिक युग में दो और अलग प्रकार की रिकॉर्डिंग विकसित हुई जिसका आज अधिक प्रयोग किया जा रहा है। पहली डिजिटल रिकॉर्डिंग जिसमें माइक्रोफोन द्वारा प्राय: मैमोरी कार्ड, एस.डी.कार्ड, फोन, आई-पॉड, इत्यादि का प्रयोग कर डाटा को आसानी से रिकार्ड किया जाता है। अन्य विवरण इस प्रकार है—''वहीं दूसरा प्रकार वर्चुअल रिकॉर्डिंग है इसमें कम्प्यूटर और लेज़र किरणों की सहायता से रिकॉर्डिंग के डाटा को सी.डी., डी.वी.डी., वी.सी.डी., हार्ड डिस्क इत्यादि में रिकॉर्ड किया जाता है।''[9]

यह साउड प्रोसेसर विभिन्न प्रकार के साउंडस बनाने या साउंड क्वालिटी को उत्तम करने में प्रयोग में आते है। कुछ Devices है—Pick ups, Sustain Pedal, Distortion, Amplifiers, Launch pads आदि। यह Sound Processor वॉयलिन, गिटार, कीबोर्ड, बाँसुरी, सितार (Zitar) आदि में प्रयोग हो रहे हैं। इन्हें बनाने वालो में Fisherman, A.K.G., Yamaha आदि प्रमुख हैं।

4. भारतीय संगीत की प्रस्तुतीकरण में नवीनता

Digitalization, Electronic Media ने संगीत पर भी अपना प्रभाव दिखाया। विभिन्न इलेक्टॉनिक पाश्चात्य वाद्यों व डिजिटल साउंड टेक्नोलॉजी ने भारतीय संगीतज्ञों को नवीन विधा को प्रस्तुत करने के लिए बाध्य किया। कुछ डीप म्यूजिक जिन्हें नई पीढ़ी सुनने या सीखने का प्रयास एकदम से नहीं करती जैसे—सूफी कलाम, पेरसियन, ईरानी संगीत की धुनें या विभिन्न भाषाओं के संगीत की धुने जैसे—पंजाबी, हरियाणवी, तमिल, इंग्लिश (अंग्रेजी) उन्हें भी डिजिटल टेक्नोलॉजी से एक नए अवतार में पाश्चात्य म्यूजिक के साथ मिक्स कर इसका फ्यूजिन किया जा रहा है। जिससे यह सारी विधाएँ और जीवित होकर सरलतापूर्वक आमजन तक भी पहुँच रही हैं। फ्यूजिन म्यूजिक में साहित्य (भाषा) के साथ-साथ वाद्यों की विशेष भूमिका रहती है। अल्ट्रा टेक्नोलाजी, साउंड सिस्टम, पियानो, की-बोर्ड, गिटार और छोटे-छोटे Percussion Instruments सूफी संगीत या फ्यूजिन म्यूजिक शास्त्रीय संगीत के रागों को भी प्रस्तुत करने का एक नया प्रयास है। इसे हारमोनाइस कर इसकी बंदिशें या ख्यालों को वेस्ट्रानाइज कर आज की पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत से परिचित कराने का यह सुन्दर प्रयास नज़र आता है। इस प्रकार फ्यूजिन म्यूजिक या सूफी संगीत को बहुत बड़े स्तर पर डिजिटलाइज कर इसे केवल भारत में ही नहीं विश्वभर तक पहुँचाने का कार्य भारतीय मीडिया के द्वारा हो रहा है जिनमें सबसे प्रमुख है—MTV Coke Studio, M.T.V. Channel, Mastii Music, UTV Bindass, Youtube Channels.

इनके माध्यम से भारतीय कलाकारों (गायकों, वादकों) विभिन्न विधाओं के संगीतकारों, संगीत प्रबंधकों आदि सभी को रोज़गार के साथ-साथ प्रसिद्धि भी मिल रही है।

अपने इस शोध पत्र के माध्यम से मैंने भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्यों की वर्तमान स्थिति या उन पर पाश्चात्य एवं वैश्विक प्रभाव Electronic or Digital Sound Technology का बदलता स्वरूप आदि सभी विषयों पर सकारात्मक पहलू दर्शाने का प्रयास किया है। जिसमें कलाकार की कला उसका कौशल और आधुनिकता दोनों आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अशोक कुमार 'यमन', टेलीविजन और संगीत, के.के. पब्लिकेशन्स 4806/24 दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014, पृ. 140
2. Sadie Stanley, Grove George, The New Groves Dictionary of Music & Musicians, New York City, St. Martins press Inc. Seventh Edition, 1966, pg. 841
3. https://en.wikipedia.org/wiki/Mandolin, Acceessed on : 15 June 2020, 10:55
4. http://www.Carnatica.net/ Sangeet/ Sexophone1.htm, Accessed on 15 June 2020, 10:59
5. Kasliwal, Suneera, Classical Musical Instruments, Rupa Publication, New Delhi, Edition 2001. pg. 263
6. गौतम, अनीता, भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5-21ए असांरी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008, पृ. 45
7. शर्मा, राधिका, भारतीय संगीत को मीडिया और सस्थानों को योगदान, संजय प्रकाशन, 4378/4-बी एम डी हाउस, अंसारी रोड, दरियांगज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 239
8. बैनर्जी, असित, हिन्दुस्तानी संगीत: परिवर्तनशीलता, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण 1992, पृ. 101
9. गौतम, अनीता, Opcit पृ. 45